

'लालपान की बेगम' कहानी का केन्द्रीय भाव

आन्ध्रप्रदेश उद्याकार पुणीश्वरनाथ द्वारा 'लालपान की बेगम' शीर्षक कहानी एक आन्ध्रप्रदेश कहानी है जिसमें ग्रामीण आन्ध्र की भाषा का सौंदर्य-सौंदर्य महसूस है। इस कहानी का केन्द्रीय भाव है - नान्य देखना। ग्राम में आगई और आपसी आहूत बीच भी एक प्रेम बसता है रेणु जी ने इस भाव को कल्पवृक्षी हस्त का प्रयास दिया है। कहानी की मूल नायिका लालपान की बेगम अर्थात् विरजू की माँ है। वह अत्यंत गुरुत्वात्कृत एवं अग्रेसर स्वभाव की है लेकिन हृदय की बहना ही कोमल है।

इस कहानी के आरंभ में ही नान्य देखने बलरामपुर जाने की लैयारी विरजू के घर में हो रही है। एक-दो बार नान्य देखने जाना खास इसलिए है कि विरजू की माँ के पास अपना लीन कीया जमीन है। एक जोड़ी बैल है। वह अपने बैलगाड़ी पर बैठकर नान्य देखने जायेगी इसी बात की खुशी पूरे परिवार में है। परिवार में कुल चार लोग हैं - विरजू की माँ, विरजू का बाप, विरजू और उसकी बहन चंपिया। दुबह से ही घर में लैयारी चली रही है। अकस्मात् इकला जा रहा है भीषे रोती बचने के लिए। विरजू की माँ दुबह से ही गुरुसे में है क्योंकि विरजू अकस्मात् खान की दर लगा रहा है इसे पोट दी है चंपिया अभी तक कापी नहीं है दुबह से इसी बीच मरवनी दुबहा है भी अगड़ा हो जाता है। मरवनी दुबहा की गाँव की बैली औरतों जो विरजू की माँ से जलती है इनसे अपनी बात कह कर विरजू की माँ को और भी चिढ़ा देती है। इसी बीच चंपिया केकावा परा चलाता है कि विरजू के बाप को गाँव में बैलगाड़ी नहीं मिली है इसलिए वह दूसरे रोल में जाती लेने चला गया है। इस बात विरजू की माँ का गुरुसा अपने परिपर निकलने लगता है। वह कहती है - "यह मर्द नान्य दिखाएगा। बैलगाड़ी पर चढ़ कर

नाच दिखाने ले जायेगा। चढ़ चुकी बैलगाड़ी पर देख चुकी
 जी भर नाच फैल जानेवाली सब पहुँच कर डरानी हो चुके होंगी।
 कहानी में नाच देखना किरजू की माँ की विशेष आकांक्षा है।
 पिछले साल से ही यह तय हो गया था कि जबकि हम फैल नही जायेंगे।
 अपने पड़ोसियों की ओर तो वे किरजू की माँ को नहीं पल्ला है। जंगी की
 पतोड़ लरेना की बीबी, पुनरी आदि तो किरजू की माँ का हमेशा
 झगड़ा होते रहता है। रूठ दूसरे पर शब्दों के काज चलते रहते हैं। किरजू
 की माँ मेले जाने का कार्यक्रम स्वागत कर घरों को जबरदस्ती बुला
 देती है और मनमन इकट्ठे कारण की उधेड़बुन में लग जाती है। शाम हो
 चला है। सभी उत्साह पति गाड़ी लेकर नौदिया को उधारता है।
 काफी लहलहो-चप्पो के कात फले कबूतर आता है। धान की छुई नालियों
 को पाले के छात्र में देखकर खुश हो जाती है। सारा कोछा उत्साह शांत
 हो जाता है। मेले की तैयारी फिर शुरू हो जाती है। जब छिछे घर
 में खुशहाली हो जाती है।

कहानी में देणु जी ने जिस कैलात्मक भाव के नायिका के सौन्दर्य
 के साथ उसके सहस्र का परिचय इस कहानी में दिया है वह भारतीय
 नारी का प्रतिबिम्ब बनकर उभरती है। किरजू की माँ तैयार होकर
 गाड़ी में नन्घियों के साथ फैली है। मखनी दुआ को घर सौंप कर पलितो
 है। उसके बाद वह गाड़ी को गाँव के बीच से ले चलने की कहती है
 गाड़ी कोई दूर तो नहीं है। सभी उठे जंगी की पतोड़ रोते हुए निकली
 है। उठे गाड़ी में उचकार कर बैठाती है। इसके साथ गाड़ी उन सभी को
 वैसी के जिसे उत्साह भगड़ा हुआ है वह अपने कंधे के सभी ईर्ष्या-मलानि को
 बल्लभ वैराग्य का गीत गाने को सभी से कहती है। धानों की खेत की लीक से
 चलती गाड़ी के पहियडो-चून्च की आवाज, आकाश में पूर्णिमा का न्यौद और
 किरजू की माँ के माथे पर मझरी के पर दीरी न्यौदनी, जवना के शरीर की महक आदि
 किरजू की माँ को दूसरे से लोक में ले जा रहे हैं। उसको सारी इच्छाएँ पूरी हो जाती है।
 उसे अब नींद आ रही है, नाच नहीं देखना है।